shrI rAmachandrAShTakam

श्री रामचन्द्राष्टकम्

Document Information

Text title : Ramachandra Ashtakam 3

File name : rAmachandrAShTakam3.itx

Category : raama, aShTaka

Location : doc_raama

Author : E. G. Janarddanan Potti

Transliterated by : Mohan Chettoor

Proofread by : Mohan Chettoor

Acknowledge-Permission: I. G. Janarddanan Potti

Latest update : November 19, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 20, 2022

sanskritdocuments.org

श्री रामचन्द्राष्टकम्

श्रीरामचन्द्र भगवन् करुणाम्बुराशे
श्रीराघवेन्द्र परिपावनचारुमूर्ते ।
मारोपमाङ्ग शरणप्रद रावणारे
संरक्ष मां शुभद मान्यमते महात्मन् ॥ १॥

सीतापते दशरथात्मज धर्मसिन्धो
दीप्ताकृते परशुराममदान्त्यहेतो ।
वातात्मजादि कपिवीर सुपूज्यमूर्ते
प्रीत्या प्रसीद कुशलवप्रियतात वत्सी ॥ २॥

भाग्यप्रदं भरतसोदरमप्रमेयं
सुग्रीवसख्यमजितं कनकाम्बराढ्यम् ।
भर्गेन्दुनेत्रमतिमोहनदिव्यरूपं
त्यागोज्ज्वलं भज दिवाकरवंशरत्नम् ॥ ३॥

तारेशबिम्बवदनं सरसीरुहाक्षं
तारेशमोक्षदमुदारमतिं सुभद्रम् ।
मारीचदानवहरं सजलाभ्रवर्ण्णं
वीर्याम्बुधिं भयहरं कलयामि रामम् ॥ ४॥

क्षत्रियवंशतिलकाम्बुजनाभ जेता
शत्रुघ्नसोदर विभो महनीयकीर्ते ।
धात्रीपते शिवद पालय सर्वथा मां
रात्रिञ्चरप्रशमनाश्रितकल्पशाखी ॥ ५॥

भूमीसुताहृदयपङ्कजवासमार्यं
भूमीसुरालिविनुतं रघुवंशदीपम् ।
सौम्यं प्रसिद्धचरितं परिशोभिताङ्गं
सुस्मेरवक्त्रकमलं कलये धरेशम् ॥ ६॥

मोदप्रदं सुकृतवारिनिधिं प्रसन्नं
श्रीदायकं शुभकरं मुनिवृन्दवन्द्यम् ।
हृद्यं विभीषणनुतं करुणार्द्रनेत्रं
पादारविन्दयुगलं तव नौमि रामम् ॥ ७॥

भूपाल शैवधनुखण्डन ताटकारे
सम्पूज्यपन्नगधरप्रिय देहि भक्तिम् ।
चापास्त्रहस्तमहिताशय दिव्यमूर्ते
मां पाहि भासुर सदा कुरु मङ्गलं मे! ॥ ८॥

श्रीरामचन्द्राय नमः ।

इति डॉ ई.जि. जनार्द्दनन् पोट्टिविरचितं
श्रीरामचन्द्राष्टकं सम्पूर्णम् ।

Composed by E. G. Janarddanan Potti

shrI rAmachandrAShTakam

pdf was typeset on November 20, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*